CHAPTER 16, काव्य-नींद उचट जाती है[नरेंद्र शर्मा]

PAGE 159, अभ्यास

11:16:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. कविता के आधार पर बताइए कि कवि की दृष्टि में बाहर का अँधेरा भीतर दुखःस्वप्नों से अधिक भयावह क्यों है?

उत्तर- कवि कहते है की इस समय बाहर जो अँधेरा पसरा है उसके कारण ही सुबह अपना रूप नहीं ले पा रही है। ये घनघोर अँधेरा खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है।जिससे सुनहरी सुबह का प्रतिबिम्ब बनने में बाधा हो रही है। ऐसा प्रतीत हो रहा की बाहर का अँधेरा भीतर के दुखःस्वप्नों से अधिक भयावह है, क्योंकि इस घनघोर अँधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है।

11:16:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. अंदर का भय कवि के नयनों को सुनहली भोर का अनुभव क्यों नहीं होने दे रहा है?

उत्तर- कवि के मन में भय व्याप्त है। यह भय कवि के नयनो को सुनहली भोर का अनुभव नहीं होने दे रही है क्युकी उस भय के कारण आशारूपी उषा कवि की आँखों तक नहीं पहुँच पा रही है। उसकी आँखे हमेशा एक सुखद पल का इन्तजार कर रही है।

PAGE 160, अभ्यास

11:16:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. कवि को किस प्रकार की आस रातभर भटकाती है और क्यों?

उत्तर- कवि आशा के प्रकाश की खोज में रातभर भटकता है। कवि की इच्छा है कि सुबह जल्दी हो

और हर दिशा में प्रकाश फ़ैल जाए। कवि कहते है की बाहर व्याप्त अँधेरे के कारण सुबह नहीं हो पा ही है। बाहर का अँधेरा ख़त्म नहीं हो रहा है जिस से सुबह के आने में बाधा हो रही है।

11:16:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. कवि चेतन से फिर जड़ होने की बात क्यों कहता है?

उत्तर- कवि कहते है कि वह जानते है की बाहर के वातावरण का प्रभाव हर चेतन मनुष्य पर अवश्य पड़ता है। बाहर यदि अँधेरा होगा तो मनुष्य के मन में उस अँधेरे के कारण भय होगा। भय से उसके मन में विभिन्न प्रकार की चिंताएं उभर कर आएँगी। कवि के मन में भी अँधेरे के कारण भय होता है इसलिए कवि सोना चाहता है। जिस से उसके मन में व्यापत भय के कारण उत्पन्न चिंताएं समाप्त हो जाएँ। उसके सोने के कारण उसे

भय और चिंता से दूर जाने के लिए सुबह का इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा।

11:16:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. अंधकार भरी धरती पर ज्योती चकफेरी क्यों देती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि कहते है की उन्हें धरती पर हर तरफ अँधेरा ही अँधेरा व्याप्त हुआ दिखता है। इस अँधेरे को मिटने के लिए ज्योति धरती के चक्कर लगा रही है। ज्योति इस अँधेरे के स्थान पर पूरे धरती पर प्रकाश करना चाहती है।

11:16:1: प्रश्न-अभ्यास:8

6. 'अंतर्नयनों के आगे से शिला न तम की हट पाती है' पंक्ति में 'अंतर्नयन' और 'तम की शिला' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति में, 'अंतर्नयन' शब्द का अर्थ , मन की आँखे या अंतर्दृष्टि है। ‘तम की शिला’ का अर्थ अन्धकार शिला है।

11:16:2: योग्यता-विस्तार:1

7. क्या आपको लगता है कि बाहर का अँधेरा भीतर के अँधेरे से ज़्यादा घना है? चर्चा करें।

उत्तर- मुझे लगता है कि बाहर का अंधेरा भीतर के अंधेरे से ज्यादा घना है। बाहर के अँधेरे कवि का अर्थ समाज में व्याप्त कुरीतियों, विषमताओं, के रूप में है। यह कभी खत्म नहीं होने का नाम लेता है। इसमें मानव कुचला जाता है। आंतरिक अंधकार तभी समाप्त होगा जब वे समाप्त हो जाएंगे। सभी ने सदियों से इसके स्वरूप को विकृत किया है। इसका प्रभाव यह हुआ है कि मनुष्यों में असमर्थता, व्याकुलता, निराशा और आक्रोश के

मौजूदा भाव हैं । जिस दिन बहार का अँधेरा ख़त्म हो जायेगा, मन का अँधेरा भी हट जायेगा।